वर्ष-2, अंक-2, फरवरी 2018 आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.) CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

फरवरी का महीना फूलों और गुनगुनी धूप का महीना है. इस महीने में बसंत पंचमी का त्योहार भी मनाया जाता है. देखते-देखते यह शिक्षा सत्र भी समाप्ति की ओर है. आप सब अपनी पढ़ाई में व्यस्त होंगे. फिर भी समय निकाल कर मनोरंजन तथा ज्ञानवर्धन के लिए किलोल अवश्य पढ़ें. हमेशा की तरह यह अंक भी http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. इस अंक में भी छत्तीसगढ़ी बालगीत और छत्तीसगढ़ी जनऊला हैं. उम्मीद है आपको अच्छे लगेंगे. हमें एक दिव्यांग बालक का बनाया सुंदर चित्र मिला है जिसे हमने प्रकाशित किया है. सभी से पुन: अनुरोध है कि किलोल के लिये सामान्य ज्ञान, विज्ञान के खेल, संस्मरण, चुटकुले कहानी और पहेलियां dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेजें. बच्चों को प्यार.

आलोक शुक्ला

राह का साथी

किसी नगर में एक लड़का रहता था. उसका नाम था ब्रह्मदत्त. एक बार उसे दूसरे गांव जाना था. वह चलने लगा तो उसकी मां ने कहा- बेटा अकेले न जाओ, किसी को साथ ले लो. लड़के ने कहा- इस रास्ते में कोई विघ्न-बाधा नहीं है. किसी को साथ लेने की क्या जरूरत है. मां ने उसे एक केकड़ा देकर कहा- अच्छा, कोई और साथी नहीं है तो तुम इस केकड़े को ही साथ ले लो. हो सकता है यही तुम्हारे किसी काम आ जाए.

मां का मन रखने के लिए लड़के ने उस केकड़े को पकड़कर कपूर की एक डिबिया में रख लिया और उसे एक झोले में डालकर चल पड़ा. कुछ दूर जाने के बाद वह एक पेड़ के नीचे आराम करने को रुका और वहीं सो गया. इसी बीच उस पेड़ के कोटर से एक सांप निकला और रेंगता हुआ लड़के के पास चला आया. सांपों को कपूर की गंध बहुत भाती है इसलिए वह पोटली फाड़कर उसमें रखी डिबिया को ही निगलने लगा. इसी बीच डिबिया खुल गई और डिबिया में रखे केकड़े ने निकलकर सांप का गला पकड़ लिया और उसकी जान ले ली.

लड़के की नींद खुली तो उसने देखा कि कपूर की डिबिया से सिर टिकाए सांप मरा पड़ा है. उसे समझते देर नहीं लगी कि यह डिबिया में रखे केकड़े का ही काम है. अब उसे अपनी मां की कही बात याद आई कि अकेले नहीं जाना चाहिए. रास्ते के लिए कोई न कोई साथी जरूर ढूंढ लेना चाहिए. उसने सोचा, मैंने अपनी मां की बात मान ली, सो ठीक ही किया.

सीख : जीवन में अकेले रहने से अच्छा एक साथी होना लाभदायी होता है.

मित्रता की पहचान

लेखिका - कु. शीला सारथी व कु. मनीषा महंत नवापारा कर्रा पाली कोरबा छत्तीसगढ़

दो दोस्त मनीष और शैलेष जंगल के रास्ते घर जा रहे थे. अचानक दूर से एक भालू आता दिखाई दिया. भालू को अपने पास आता देखकर दोनों डर गये. शैलेष जो पतला-दुबला था झट से पेड़ पर चढ़ गया. मनीष जो मोटा था वह जल्दी पेड़ पर चढ़ नहीं सकता था. वह तुरंत अपनी सांसों को रोककर जमीन पर लेट गया. कुछ देर बाद भालू वहां से गुजरा. भालू ने मनीष को सूंघा और वहां से चला गया. इस तरह दोनों की जान बच गई लेकिन इससे यह सीखने को मिला कि मित्रता की पहचान मुसीबत की घड़ी में होती है। सच्चा मित्र वही जो मुसीबत में काम आये।

चित्र कहानी

पिछले अंक में हमने कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर कु. अंजली मरकाम की कहानी हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

कबूतर और चींटी

लेखिका - कु.अंजली मरकाम, कक्षा सातवीं, नवापारा कर्रा पाली कोरबा छत्तीसगढ़

किसी नदी के किनारे एक पेड़ पर चींटियों का छत्ता था. छत्ते में बहुत सी चींटियां रहती थीं. उनमें एक रानी चींटी भी थी. एक दिन रानी चींटी नदी में गिर गई. उसने पानी से निकलने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु वह निकल न सकी. वह नदी की धारा में बहने लगी. नदी के किनारे एक कबूतर पानी पी रहा था. उसे चींटी पर बहुत दया आई. वह चींटी को बचाने के लिए एक सूखा पत्ता लेकर अपनी चोंच में दबाये हुए नदी के किनारे -किनारे उड़ने लगा. थोड़ी दूरी पर जब उसे रानी चींटी दिखाई दी तो उसने पत्ता चींटी के बिल्कुल आगे डाल दिया. चींटी पत्ते पर चढ़ गई. पत्ता धीरे धीरे किनारे से लग गया. रानी चींटी डूबने से बच गई. उसने कबूतर को बहुत धन्यवाद दिया.

अगले अंक की चित्र कहानी के लिए हम आपको दीप्ति दीक्षित जी एवं उनके स्कूल के बच्चों व्दारा बनाया गया सुंदर चित्र दे रहे हैं. खास बात यह है कि यह चित्र दीप्ति जी एवं उनके स्कूल के बच्चों ने स्कूल की बाहरी दीवार पर बनाया है जिससे स्कूल की सुंदरता बढ़ गई है. आप भी इस प्रकार अपने स्कूल को सुंदर बना सकते हैं. अब इस चित्र पर अच्छी सी कहानी लिखकर हमें भेज दो. हमें आपकी कहानियां का इंतज़ार रहेगा.

सिक्छा के हक

लेखक - रामफल यादव (धनरास)

सिक्छा के हक ल जानव जी,
अँजोरी नवा लानव ।

एला सुख के मन्तर मानव जी,
अँजोरी नवा लानव।

लक्ठा इस्कूल फोकट म पढ़ाई,
मनभर करलव जम्मों भाई ।

घर बरोबर इस्कूल अब लागे,
जम्मों लइका के भाग अब जागे।

गुरू ल मितान जस जानव जी,
अँजोरी नवा लानव।

भेद मिटागे बड़े छोट के,
बेरा लहुटगे मीठ गोठ के।

उमर जस,तस कक्छा हे,
लउहा भरती करावव जी।

सारा जग रंगो से भरा

लेखिका - कविता कोरी

चलो करे रंगों का ज्ञान।
बच्चों इस पर देना ध्यान।।
आओ जाने रंग के भेद।
हंस का रंग होता है सफेद।।
हरी हरी होती है घास।
और नीला होता आकाश।।
लाल रक्त और काले बाल।
पीली पीली होती दाल।।
नारंगी रंग में रंगा संतरा।
स्वाद और सेहत से भरा।।
बैंगन बैंगनी रंग चढ़ाए।
नाचे कूदे पेट फुलाए।।
रंगों से नहाती ये धरा।
सारा जग है रंगो से भरा।।

बेटी हूँ मै

लेखिका - कु. साहिस्ता बेगम, कक्षा- 8वीं, पूर्व माध्यमिक शाला कोंटा सुकमा

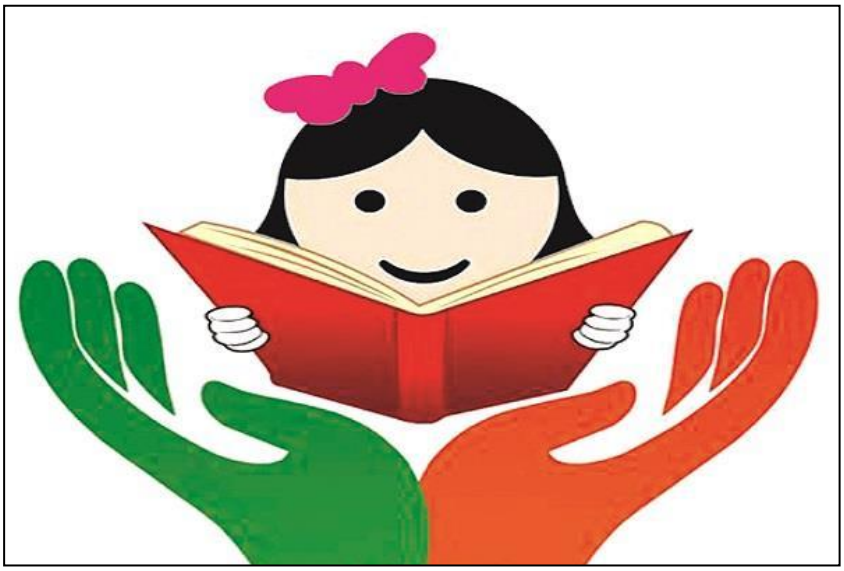

पारस का पत्थर हूं,
एक अनमोल मोती हूँ मै,
बेटी हूँ मै.

घर की लक्ष्मी बनकर आई,
खुशियों की बारात मै लाई,
आँगन की रंगोली हूँ मैं,
बेटी हूँ मै.

सुख-दुःख में है साथ निभाया,
पंछी बन उड़ कर दिखलाया
प्रेम-प्यार की ज्योति हूँ मैं,
बेटी हूँ मै.

पिंजरा के सुआ

लेखक - रघुवंश मिश्रा

मय हरियर सुआ मोर लाली-लाली चोंच
रुखवा के फर न खावौं नोच-नोच

रुखवा ले पकर के मोला ले आईस
घर म मोर बर पिंजरा बनाईस
पिंजरा म बइठ के रोवों सोंच-सोंच
मय हरियर सुआ मोर लाली-लाली चोंच

का सोचत होहें मोर दाई-ददा
कौन पाप के मोला मिलिस सजा
असक जान मोला लिहिस दबोच
मय हरियर सुआ मोर लाली-लाली चोंच

आनी-बानी के खाय बर लावै
खाए कोती बर मन नई जावै
खाए बिना करै पेट पोंच-पोंच
मय हरियर सुआ मोर लाली-लाली चोंच

पाके मउका पिंजरा ल तोड़व
खुल्ला बादर म फिर से उडव
सब कोती उड़ेव बिना संकोच
मय हरियर सुआ मोर लाली-लाली चोंच

<u>जनउला</u>

-1-

संकलनकर्ता - कु. उमेश्वरी पाल, गड़रियापारा, लाखासर, बिलासपुर

1. पानी के तीर-तीर चर बोकरा,
   पानी अँटागे मर बोकरा । (दीया)

2. चार चौकड़ी गोल बजार,
   सोला रानी तीन यार । (पासा)

3. नानचून टूरा, कूद-कूद के पार बाँधे । (सूई)

4. एक सींग के बोकरा
   मेरेर-मेरेर नरीयाय,
   मुहु डाहन चारा चरे,
   पाछु डाहन पघुराय। (जांता)

5. काँटे मा कटाय नहीं,
   भोंगे मा भोंगाय नहीं। (छइँहा)

-2-

संकलनकर्ता - कु. सुषमा नवापारा कर्रा पाली कोरबा

1. एक धारन के चार पटिया
   अर्थ- एक स्तंभ पर चार पंक्तियां
   उत्तर- सुनसुनिया भाजी या चरपनिया भाजी (इसके तने के साथ चार पत्ते जुड़े होते हैं)

2. धंधा भयी धंधा, दूनो पार चंदा।
   अर्थ- काम धंधा में आने वाले सामान जिसके दोनों तरफ चांद बना हो.
   उत्तर- मांदर एक वाद्ययंत्र

3. एक ठन पेड़ म एक ठन पत्ता
   अर्थ- एक पेड़ पर एक ही पत्ता हो
   उत्तर- तिरंगा झंडा (एक डंडे में एक झंडा लगाया जाता है)

4. अंदर कटोरी बाहर कटोरी
   अर्थ- जिसके अंदर बाहर कटोरी नुमा हो
   उत्तर- श्रीफल (नारियल जिसमें दो कटोरी जैसी कवच और बीज होता है)

5. पेट खलाखल पूंछी गाभिन
   अर्थ- पेट खाली और पूंछ भरा हुआ
   उत्तर- चींटी (पेट चपटा और पूंछ मोटा होता है)

6. दिन के कपड़ा पहिने, रात के खुल्ला रहय
   अर्थ- दिन में कपड़ा पहने हुए और रात को बिना कपड़े का
   उत्तर- डांगी, डंगनी (कपड़ा सुखाने का डंडा)

7. पांच भाई के एक ठन अंगना
   अर्थ- पांच भाई का एक आंगन
   उत्तर- हाथ (अंगुली पांच भाई और हथेली एक आंगन)

संकलन कर्ता - कु गरिमा सोरी, बोरिया मोकासा मानपुर

1. अत्थर चाटे,पत्थर चाटे
   चाटे बन के घास,
   दुइक दुआ, छुइक छुआ
   होवै नहीं बात
   उत्तर - नाई

2. करिया हे पर कौआ नहीं,
   लम्बा हे पर सांप नहीं
   तेल चढ़थे पर हनुमान नहीं
   फूल चढ़ते पर भगवान नहीं
   उत्तर - बाल

3. न गोड़ न हाथ, मुँह न दांत
   चाकर काया ले करे बात
   उत्तर - अखबार

4. एक चिरई के सात रंग
   खोंधरा म जाही त एके रंग
   उत्तर - पान

5. बिन मुड़ के छेरी, बिन मुड़ के गाय
   बिन गोड़ के राउत, खार खार कूदाय
   उत्तर - केकड़ा

Opposite Words

Author – Dilkesh Madhukar

Boom, boom,

Touch your head.

Boom boom

Touch your foot.

Boom boom

Open your mouth.

Boom boom

Close your mouth.

Boom boom

Come to front.

Boom boom.

Go to back.

सामान्य ज्ञान - आश्चर्यों से भरा अंतरिक्ष

लेखिका - कु. नाजिया खान कोण्टा जिला - सुकमा

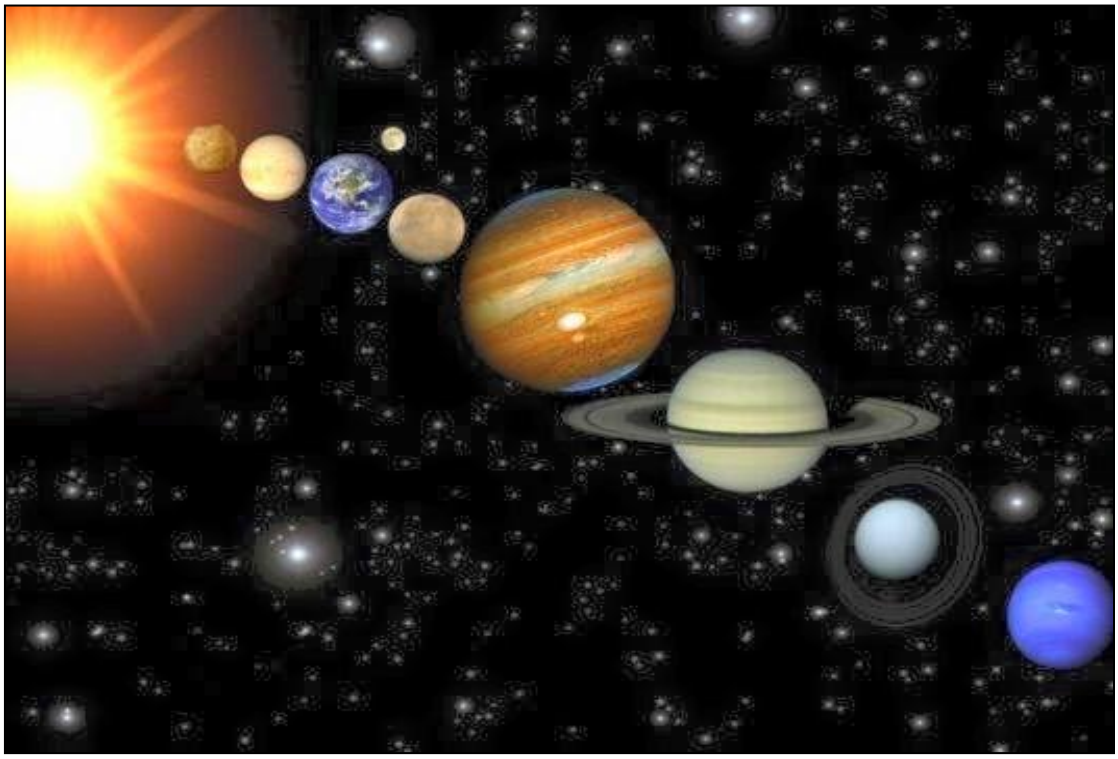

सूर्य से पृथ्वी पर आने वाला प्रकाश 30 हजार वर्ष पुराना होता है - सूर्य से पृथ्वी की दूरी तो मात्र 8.3 प्रकाश मिनट है. फिर ऐसा कैसे हो सकता है? यह सच है कि प्रकाश को सूर्य से पृथ्वी तक आने में 8.3 मिनट ही लगते हैं, किंतु जो प्रकाश हम तक पहुंच रहा है उसे सूर्य की कोर से उसकी सतह तक आने में 30 हजार वर्ष लगते हैं और वह सूर्य की सतह पर आने के 8.3 मिनट पश्चात् पृथ्वी तक पहुंचता है, यानि कि जो प्रकाश आखिरकार धरती पर पहुंचता है वह 30 हजार वर्ष पुराना होता है.

अंतरिक्ष में ध्वनि एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जा सकती - ध्वनि को एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है और अंतरिक्ष में निर्वात होने के कारण ध्वनि को गति के लिए कोई माध्यम उपलब्ध नही हो पाता.

शनि ग्रह का घनत्व - शनि ग्रह का घनत्व इतना कम है कि यदि कांच के किसी विषालाकार बर्तन में पानी भरकर शनि को उसमें डाला जाए तो वह उसमें तैरने लगेगा.

बृहस्पति ग्रह का आकार - बृहस्पति ग्रह इतना बड़ा है कि यदि शेष सभी ग्रहों को आपस में जोड़ दिया जाए तो वह संयुक्त ग्रह भी बृहस्पति से छोटा ही रहेगा.

शुक्र का घूर्णन - शुक्र ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जो घड़ी की सुई की दिशा में यानि क्लाकवाइज घूमता है.

चन्द्रमा का आयतन - चन्द्रमा का आयतन प्रशांत महासागर के आयतन के बराबर है.

शनि के वलय-शनि के वलय की परिधि 500000 मील है, जबकि उसकी मोटाई मात्र एक फुट है.

ग्रह से बड़ा उपग्रह - बृहस्पति का उपग्रह, जिसका नाम गेनीमेड है, बुध ग्रह से भी बड़ा है.

लेटा हुआ ग्रह - यूरेनस की अक्षीय स्थिति के कारण उसे 'लेटा हुआ ग्रह' भी कहते हैं.

ग्रहों के रंग - शनि को पीला, पृथ्वी को नीला, यूरेनस को हरा, मंगल को लाल ग्रह भी कहते हैं

कौन से ग्रह नंगी आंखों से दिखते हैं - हमारे सौर मंडल में 8 ग्रह हैं, लेकिन हम रात में नंगी आंखों से सिर्फ पांच - बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति और शनि ग्रह ही देख सकते हैं. यूरेनस (अरूण) और नेपच्यून (वरूण) पृथ्वी से बहुत दूर होने के कारण नंगी आंखों से नहीं देखे जा सकते.

<u>कला - चावल पेंटिग आर्ट</u>

लेखिका - कविता कोरी गड़रियापारा, संकुल-लाखासर, ब्लाक-तखतपुर, जिला-बिलासपुर

बच्चों आज हम आपको पेंटिग करने का अनोखा व मनोरंजक तरीका बताएंगे.

<u>सामग्री</u> :- कोरा कागज, पेंसिल, मुठ्ठी भर चावल, फेविकोल अथवा गोंद, रंगीला कलर अथवा प्राकृतिक रंग (हल्दी, निरमा, हरा गुलाल,चूना, नील), ब्रश.

<u>विधि</u> :- कागज़ पर तिरंगे झंडे का चित्र बना लिजिए. तिरंगे झंडे की ऊपर की पट्टी पर ब्रश की सहायता से फेविकोल/गोंद की एक पतली परत लगाइए. उसके ऊपर चावल के दानों को फैला दीजिए. फिर ऊंगलियों व्दारा हल्के से दबाएं. उसके बाद अन्य कागज पर चित्र बने कागज पर उल्टा कर शेष चावल के दानों को झड़ा कर अलग कर लें. आप देखेंगे कि जितने क्षेत्र में फेविकोल/गोंद लगा है, चावल के दानों की पकड़ केवल उतने ही क्षेत्र पर होगी शेष दाने अलग हो जाएंगे. इसी विधि को अन्य पट्टियों व अशोक चक्र पर भी करें. चित्र पर चावल चिपक जाने के पश्चात् इसे 5 मिनट सूखने दें. इसके बाद चित्र को भली भाँति देखे कि कोई हिस्सा छूटा तो नहीं है. अगर छूटा हो तो उस हिस्से पर गोंद लगा कर चावल चिपकाएं. चावल के दाने चिपक जाने पर आप चावल से बने चित्र पर पुनः फेविकोल/गोंद की एक परत चढ़ा दें ताकि चावल से बने चित्र को मजबुती मिले और वह चित्र से अलग नहीं हों. उपरोक्त प्रक्रिया पूर्ण हो जाने के 10 मिनट बाद आप तिरंगे झंडे को ब्रश की सहायता से रंग दें. इसी प्रकार आप बाघ, मोर, आम, कमल आदि अन्य राष्ट्रीय प्रतीक भी बना सकते हैं. तो चलिए चित्र बनाइए और अपने गणतंत्र दिवस को रंगो से सजाइए.

चुटकुले

एक आदमी ने भगवान से पूछा – कि आपके लिए करोड़ों साल कितने होते हैं ?

भगवान – एक सेकंड के बराबर

आदमी – और करोड़ों रूपये ?

भगवान – एक फूटी कौड़ी के बराबर

आदमी – तो क्या,आप मुझे एक फूटी कौड़ी दे सकते हैं ?

भगवान – क्यों नहीं , रुक एक सेकंड...

एक लड़का दुकान पर गया और बोला कैलेंडर दे दो.

दुकानदार ने पूछा - कैसा दूं ?

लड़का बोला - जिसमें छुट्टियां ज्यादा हों

तेरा नाम क्या है? - शेरसिंह.

बाप का नाम ? - शमशेर सिंह

रहते कहां हो ? – शेरांवाली गली में

कहां जा रहे हो ? – टाइगर मेनशन

किसके मिलना है ? - सिंघानिया से

एक बात बताऊं

यह जो नया साल आया है - यह एक साल से ज्यादा नहीं चलेगा

विज्ञान के खेल - मोमबत्ती का झूला

आओ तुम्हे मोमबत्ती का झूला बनाने का मज़ेदार खेल सिखाते हैं. यह खेल तुम किसी बड़े के साथ मिलकर ही करना क्योंकि इसमें आग से जलने का खतरा भी है.

सामग्री - दो पेपर कप, चिपकाने वाला टेप, दो सेफ्टी पिन, एक लंबी सुई, एक मोमबत्ती और एक माचिस.

विधि - सबसे पहले पेपर कप पर चित्र में दिखाए अनुसार सेफ्टी पिनों को टेप से चिपका लो. अब मोमबत्ती को दोनो ओर से थोड़ा सा छील लो जिसे उसे दोनो ओर से जलाया जा सके. इसके बाद लंबी सुई को मोमबत्ती में घुसा लों और इस सुई को नीचे के चित्र में दिखाए अनुसार सेफ्टी पिनों के छेद में डालकर लटका दो. इसके बाद मोमबत्ती को दोनो ओर से जला दो. मोमबत्ती के जलने से मोम पिघलकर गिरता है. जिस ओर से मोम की एक बूंद गिर जाती है वह सिरा हल्का होकर ऊपर उठ जाता है. तब तक मोमबत्ती के दूसरी ओर से पिघलकर मोम की बूंद गिरती है और अब यह सिरा हल्का होकर ऊपर उठ जाता है. ऐसा तब तक चलता रहेगा

जब तक मोमबत्ती पूरी पिघल न जाये. इसे देखकर ऐसा लगता है जैसे मोमबत्ती का एक झूला चल रहा है. है न मज़ेदार खेल.

पीयूष के चित्र

पीयूष बोरिया कला मोकासा, मानपुर में कक्षा पांचवी में पढ़ते हैं. वे मूक-बधिर हैं. इस दिव्यांग बालक के अंदर एक गजब की प्रतिभा है. वे बहुत सुंदर चित्र बनाते हैं. हम यहां उनका चित्र प्रकाशित कर रहे हैं. आशा है आप सबको पसंद आयेगा.

वर्ग पहेली

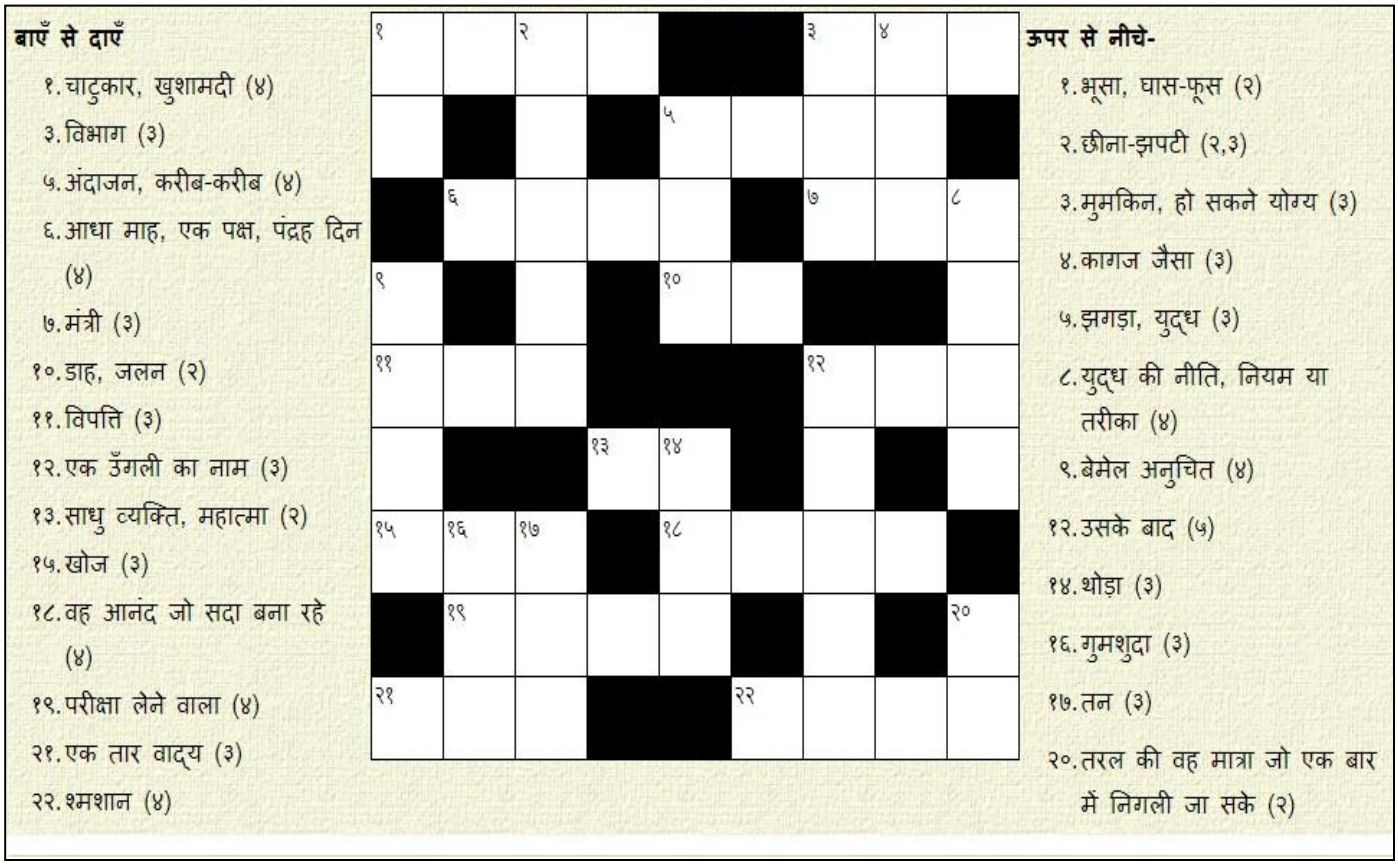
बाएँ से दाएँ
१.चाटुकार, खुशामदी (४)
३.विभाग (३)
५.अंदाजन, करीब-करीब (४)
६.आधा माह, एक पक्ष, पंद्रह दिन (४)
७.मंत्री (३)
१०.डाह, जलन (२)
११.विपत्ति (३)
१२.एक उँगली का नाम (३)
१३.साधु व्यक्ति, महात्मा (२)
१५.खोज (३)
१८.वह आनंद जो सदा बना रहे (४)
१९.परीक्षा लेने वाला (४)
२१.एक तार वाद्य (३)
२२.श्मशान (४)
ऊपर से नीचे-
१.भूसा, घास-फूस (२)
२.छीना-झपटी (२,३)
३.मुमकिन, हो सकने योग्य (३)
४.कागज जैसा (३)
५.झगड़ा, युद्ध (३)
८.युद्ध की नीति, नियम या तरीका (४)
९.बेमेल अनुचित (४)
१२.उसके बाद (५)
१४.थोड़ा (३)
१६.गुमशुदा (३)
१७.तन (३)
२०.तरल की वह मात्रा जो एक बार में निगली जा सके (२)

उत्तर

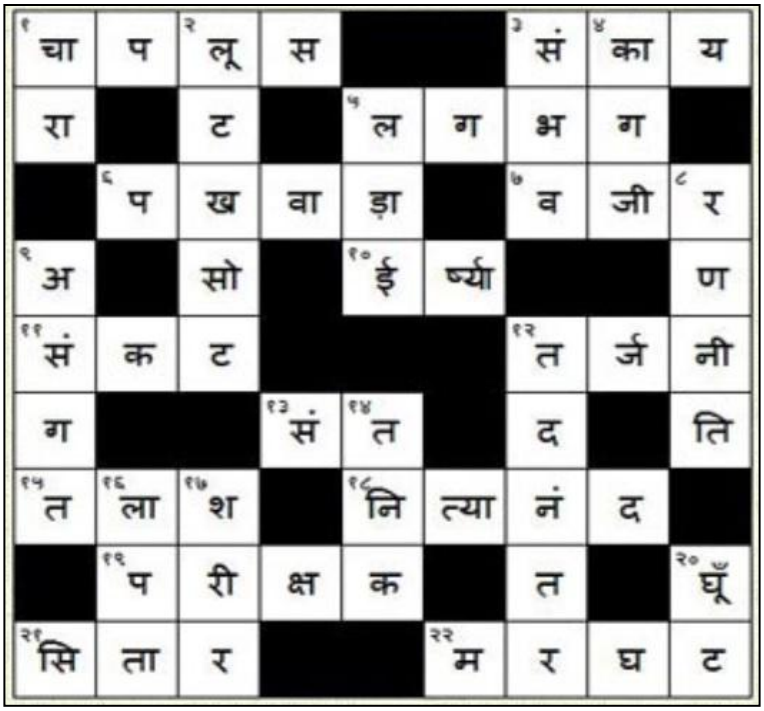
१चा प २लू स ३सं ४का य
रा ट ५ल ग भ ग
६प ख वा ड़ा ७व जी ८र
९अ सो १०ई र्ष्या ण
११सं क ट १२त र्ज नी
ग १३सं १४त द ति
१५त १६ला १७श १८नि त्या नं द
१९प री क्ष क त २०घूँ
२१सि ता र २२म र घ ट